Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, COSMOS Impact Factor: 5.647, Volume 10, No. 02, April, 2020, pp. 153-158

T;kfr"k 'kkL= esa lk;koj.kh; rRo

दीपावली व्यास*

परिचय

T;kfr"k 'kkL=

भारतीय संस्कृति का मुलाधार वेद हैं। वेद से ही हमें धर्म और सदाचार का ज्ञान प्राप्त होता है। हमारी पारिवारिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विचारधाराओं के स्त्रोत भी वेद ही हैं। भारतीय विद्याएँ वेदों से ही प्रकट हुई हैं। वेदों के छः अंग कहे गये हैं –

1. शिक्षा, 2. कल्प, 3. व्याकरण, 4. निरुक्त, 5. छन्द तथा ज्योतिष। वेदों का सम्यक् ज्ञान कराने के लिए इन छः अंगों की अपनी विशेषता है। मंत्रों के उचित उच्चारण के लिए शिक्षा का, कर्म–काण्ड और यज्ञीय अनुष्ठान के लिए कल्प का, साधु शब्दों के रूप ज्ञान के लिए व्याकरण का, शब्दों के निर्वचन के लिए निरुक्त का, वैदिक छन्दों के ज्ञान हेतु छन्द का और अनुष्ठानों के उचित काल निर्णय के लिए ज्योतिष का उपयोग मान्य हैं।

NUn% iknkS rq onL; gLrkS dYiks·Fk iB~;rA
T;kfr"kke;ua p{kqfu#äa Jks=eqP;rAA
f'k{kk ?kzk.ka rq onL; eq[ka 0;kdj.ka LereA
rLekr~ lk³xe/khR;So cãyksds egh;rAA [1]

महर्षि पाणिनी ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है– ''ज्योतिषामयनं चक्षुः''। जैसे मनुष्य बिना चक्षुः इन्द्रिय के किसी भी वस्तु का दर्शन करने में असमर्थ होता हैं, ठीक वैसे ही वेदशास्त्र या वेदशास्त्र विहित कर्मों को जानने के लिए ज्योतिष का अन्यतम महत्त्व सिद्ध है। भूतल, अंतरिक्ष एवं भूगर्भ के प्रत्येक पदार्थ का त्रैकालिक यथार्थ ज्ञान जिस शास्त्र से है, वह ज्योतिषशास्त्र है। अतः ज्योतिष ज्योति का शास्त्र है। वेद के अन्य अंगों की अपेक्षा अपनी विशेष योग्यता के कारण ही ज्योतिषशास्त्र वेद भगवान् का प्रधान अंग–निर्मल चक्षु माना गया है और इसका अन्य कारण यह भी है कि भविष्य जानने की इच्छा सभी युगों में मनुष्यों के मन में सदा प्रबल रहती है, जिसकी परिणति यह ज्योतिषशास्त्र है।

onp{kq% fdyn Lerr T;kfr"ke
eq[;rk pk³xe/;s·L; rukP;rA
l;qrks·ihrj% d.kkuklfnfHk%
p{kq"kk³xu ghuks u fdf×pRdj%AA [2]

जैसे शरीर में कर्ण, नासिका, आदि अन्य अंगों के विद्यमान रहने पर भी नेत्र के न रहने पर व्यर्थता प्रतीत होती है, व्यक्ति कुछ भी करने में असमर्थ हो जाता है वैसे ही अन्य शास्त्रों के रहने पर भी नेत्र रूपी ज्योतिषशास्त्र के बिना वेद की अपूर्णता रहती है, इसीलिए ज्योतिष शास्त्र की प्रमुखता प्रकट होती है।

---

* शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

ज्योतिषभास्कर के भास्कराचार्य का कथन है कि पूर्व जन्मों में जो भी शुभा"ुभ कर्म किया गया हो, उसके फल तथा फल प्राप्ति के समय को यह शास्त्र वैसे ही स्पष्ट अर्थात् व्यक्त करता है जैसे अन्धकार में स्थित पदार्थों को दीपक व्यक्त कर देता है।

;n ifpreU; tUefu 'kHkk'kHk rL; de.k ifäeA
0;¬t;fr 'kkL=err refl nO;kf.k nhi boAA [3]

कृषि, व्यापार, उद्योग, यज्ञ, सदाचार, धर्म, व्यवसाय तथा जीवनयात्रा हेतु शुभ काल निर्णय के लिए ज्योतिष ही एक मात्र साधन है। कर्मों का कौनसा काल श्रेष्ठ है, कौन सा मुहूर्त उत्तम है, इसे व्याकरण आदि शास्त्रों के माध्यम से नहीं जाना जा सकता। मुहूर्त्त की उपयोगिता यज्ञादि कर्म के लिये है।

onk fg ;KkFkefHkioÙkk] dkykuiok fofgrk'p ;KkA
rLekfnn dkyfo/kku'kkL=] ;k T;kfr"k on l on loeAA [4]

वेदों का प्रवर्तन यज्ञों के सम्यक् सम्पादन के लिये हुआ। वे यज्ञ भी काल के सम्यक् ज्ञान होने पर ही यथाविधि सम्पन्न होते हैं। यह ज्योतिषशास्त्र काल का विधायक है, अतः जो ज्योतिष को जानता है, वह सबकुछ जानता है।

viR;{kkf.k 'kkL=kf.k fooknLr"k doyeA
iR;{k T;kfr"k 'kkL= pUnkdk ;= lkf{k.kkAA [5]

अन्य शास्त्र अप्रत्यक्ष है, इसलिए उनमें तो विवाद ही रहता है, किन्तु ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्षशास्त्र है और इसके साक्षी सूर्य तथा चंद्रमा हैं।

xgk/khu txRlo xgk/khuk ujkojkA
dkyKku xgk/khu xgk deQyinkAA [6]

ग्रहों के अधीन ही यह संपूर्ण संसार है। ग्रहों के अधीन ही सभी श्रेष्ठ मनुष्य होते हैं। काल का ज्ञान भी ग्रहों के अधीन है और ग्रह ही कर्मों के फल को देने वाले होते हैं।

Hkkjrh; o"kk foKku

''प्राचीन काल के ऋषि–मुनियों के पास आज की तरह न तो विकसित वेधशालाएँ थीं और न सूक्ष्म परिणाम देने वाले आधुनिकतम वैज्ञानिक उपकरण, फिर भी वे अपने अनुभव तथा अतीन्द्रिय ज्ञान की सहायता से आकाशीय ग्रह–नक्षत्रों आदि का अध्ययन करके वर्षों पूर्व मौसम का पूर्वानुमान कर लेते थे। यद्यपि वैदिक संहिताओं, पुराणों, स्मृतियों में इस विज्ञान का उल्लेख मिलता है, फिर भी आचार्य वराहमिहिर का इसमें विशेष योगदान रहा है। उन्होंने अपने ग्रंथ बृहत्संहिता में इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है। संहिता ग्रन्थों में तो ऐसे मंत्रों का भी विधान है जिनके द्वारा यथेच्छ रूप से वर्ष के आयोजन और निवारण को नियंत्रित किया जा सकता है''।। [7]

ऋतुचक्र का प्रवर्तक सूर्य होता है। सूर्य जब आद्रा नक्षत्र (सौर गणना) में प्रवेश करता है, तभी से औपचारिक रूप से वर्षा ऋतु का प्रारम्भ माना जाता है। भारतीय पंचांगकार प्रतिवर्ष आर्द्रा प्रवेश–कुण्डली बनाकर भावी वर्षा की भविष्यवाणी करते हैं। आर्द्रा से नौ नक्षत्र पर्यन्त वर्षा का समय माना जाता है।

गर्ग, पराशर आदि ऋषियों के समय तो यह विज्ञान गुरु–शिष्य परम्परा में रहा। कालान्तर में अनेक ज्योतिर्विदों द्वारा इसे सर्वसुलभ कराया गया।

of"V;kx

शुक्र, बुध के उदय अस्त में वर्षा होती है,

जलराशि पर चन्द्रमा के होने से पक्ष के,

अन्त में संक्रान्ति पड़ने से वर्षा होती है,
बुध, शुक्र समीप में हो तो पृथ्वी भर में जल,
वर्षे! इन दोनों के बीच में सूर्य आ पड़े तो,
समुद्र के जल को भी सुखा दे। (अवर्षण होता है),
मंगल के राशि सञ्चार में मेघ बरसता है,
शनि के उदय अस्त तथा राशि बदलने में,
वर्षा होती है। शनि के पीछे गुरु आवे तो पृथ्वी,
भर में वर्षा हो। सूर्य के आगे भौम (मंगल) हो तो जल,
शोष हो और पीछे पड़े तो अति वर्षा करे।। [8]

''पर्यावरण अंग्रेजी शब्द (Environment) 'एनवायरमेन्ट' का अनुवाद है, जो दो शब्दों अर्थात् (Environ) 'एनवायरन' और (Ment) 'मेन्ट' से मिलकर बना है''। जिसका अर्थ (Encircle or all round) आवृत्त करना है। अर्थात् जो चारों ओर से घेरे हुए है, वह पर्यावरण है। शाब्दिक दृष्टि से इसका अर्थ (Surroundings) है, जिसका तात्पर्य है, 'चारों ओर से घेरे हुए'। संस्कृत व्युत्पत्ति की दृष्टि से इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की जा सकती है – परि+आ+वरण अर्थात् वरण मूल शब्द से (वृ+ल्युट्+अन) में पहले 'आ' उपसर्ग लगकर संधि से 'पर्यावरण' शब्द बना है। इस दृष्टि से पर्यावरण वह है जो सब ओर से अच्छी तरह आवृत्त किये हुए या घेरे हुए है।'' [9]

यूनेस्को 1976 के अनुसार ''पर्यावरण शिक्षा एक तरीका है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य प्राप्त किये जायें। यह पृथक से विज्ञान की कोई शाखा नहीं अपितु जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है।''

Okkrkoj.k ¼i;kZoj.k½ dk izdkj

भौगोलिक परिवेश या वातावरण दो प्रकार का होता है–

- भौतिक अथवा प्राकृतिक,
- सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा मानव निर्मित

दोनों प्रकार के वातावरणों में से प्रत्येक के तीन अंग होते हैं।

- वातावरण की शक्तियाँ
- वातावरण की प्रक्रियाएँ
- वातावरण के तत्त्व

HkkSfrd vFkok izkdfrd okrkoj.k & भौतिक वातावरण से तात्पर्य उन सम्पूर्ण भौतिक शक्तियों, प्रक्रियाओं और तत्त्वों से लिया जाता है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव मानव पर पड़ता है। इन शक्तियों में सौर ऊर्जा, सूर्य तथा सौर मंडल के ग्रह, पृथ्वी की दैनिक एवं वार्षिक परिक्रमण की गतियाँ, गुरुत्वाकर्षण शक्ति, भूकम्प तथा ज्वालामुखी भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाएँ, भूपटल की गति तथा जीवन सम्बन्धी भू दृश्य सम्मिलित किए गए हैं। इन शक्तियों द्वारा पृथ्वी पर अनेक प्रकार की क्रिया व प्रतिक्रियाएँ होती है, जिनमें वातावरण के तत्त्व सम्पन्न होते हैं और इन सभी का प्रभाव मानव की क्रियाओं पर पड़ता है।

- Hkkookpd ;k vewrZ rÙo% जैसे क्षेत्रीय विस्तार और आकार, प्रादेशिक स्वरूप और आकार, प्राकृतिक स्थिति, भौगोलिक स्थिति और ज्यामितीय स्थिति।
- HkkSfrd rÙo% जैसे मौसम और जलवायु, स्थलाकृति, मिट्टियाँ और चट्टानें, खनिज, धरातलीय जल, अधोभौमिक जल, महासागर और तटीय क्षेत्र।
- tSfod rÙo% जैसे प्राकृतिक वनस्पति, जीव–जन्तु और अणु–जीव।

''lkLdfrd vFkok ekuo fufeZr okrkoj.k & उपर्युक्त प्राथमिक वातावरण को मनुष्य प्रविधि या तकनीकी सहायता से संशोधित या प्रभावित करता है और उसे अपनी आवश्यकताओं के अनुसार निर्मित कर लेता है। इस नये जन्मे वातावरण को मानव निर्मित या प्रविधिक वातावरण कहा जाता है। इसमें औजार, यंत्र व वस्तुएँ, अधिवास, परिवहन और संचार के साधन, प्रेस आदि के साथ क्षेत्र विशेष की जनसंख्या उसका वितरण एवं घनत्व, स्त्री–पुरुषों का अनुपात, आयु वर्ग, प्रजातीय रचना, शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक क्षमता, जनसंख्या वृद्धि एवं कारण सम्मिलित किये जाते हैं।''[10]

अतः मानव, सांस्कृतिक पर्यावरण के सृजन व विकास में निम्न तथ्य भी सम्मिलित किये जाते हैं –

- सामाजिक संगठन
- आर्थिक प्रारूप
- राजनीतिक संगठन
- औद्योगिक प्रतिरूप या प्रारूप

भूकम्प एवं वैदिक ज्योतिष–महर्षि गर्ग द्वारा सम्पादित एवं अनुमोदित सिद्धांत का विवेचन करते हुए यह कहा गया है कि –

अमावस्या अथवा पूर्णिमा तिथियाँ एवं इन तिथियों के पहले अथवा बाद की दो तिथियाँ भूकम्प के परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण होती है। [11]

''इस संदर्भ में लगाातार अनुसन्धान करते हुए विश्व के महत्त्वपूर्ण देश सोवियत रूस ने इन सिद्धांतों का सफल परीक्षण किया। उनके तथ्यपूर्ण शोध में निष्कर्ष निकला कि –

- विश्व में होने वाले 55.8 प्रतिशत भूकम्प इन तिथियों में ही हुए।
- चतुर्दशी एवं प्रतिपदा तिथियों पर विश्व में 33.5 प्रतिशत भूकम्प आये।
- 17 प्रतिशत भूकम्प पूर्णिमा एवं प्रतिपदा तिथियों पर घटित हुए हैं।''[12]

एक अन्य शोध में शनिग्रह एवं भूमध्य रेखा की दूरी की एक निश्चित डिग्री में ग्रहों की स्थितियों को भूकम्प का कारण पाया गया। शोध प्रकरण में क्रूर ग्रहों का प्रभाव, वृष एवं वृश्चिक राशियों में ग्रहों का स्थित होना, चन्द्रमा का पीड़ित होना, चन्द्रमा एवं बुध का एक नक्षत्रगत होना, वायु एवं पृथ्वी तत्त्वों की विवेचना आदि महत्वपूर्ण भूकम्प पूर्वसूचक पाये गये हैं।

v;u – एक वर्ष में दो अयन होते हैं। उत्तरायण तथा दक्षिणायन। ये छः–छः मास के होते हैं। सूर्य की मकर संक्रान्ति से मिथुन संक्रान्ति तक उत्तरायण तथा सूर्य की कर्क संक्रान्ति से धनु संक्रान्ति तक दक्षिणायन होता है। उत्तरायण देवताओं का एक दिन तथा दक्षिणायन देवताओं की एक रात्रि होती है।

ddkÌf{k.ke;u edjnÙkjk;.keA [13]

xksy & गोल दो होते हैं। उत्तर गोल (उत्तरी ध्रुव) तथा दक्षिणी गोल (दक्षिणी ध्रुव) छः राशियाँ – मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह और कन्या उत्तर गोल में है तथा शेष छः राशियाँ– तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन दक्षिण गोल में है। पृथ्वी के मध्य में पूर्व से पश्चिम एक कल्पित रेखा है जिसे भूमध्य (Equater) रेखा कहते हैं। इस रेखा के ऊपर उत्तर में उत्तर गोल तथा नीचे दक्षिण में दक्षिण गोल है। इनके ध्रुव स्थान को उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव कहते हैं।

e"kknkoÙkjk xksyLrqyknk nf{k.k% Le`r% AA [14]

_rq,¡ & एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती है। प्रत्येक ऋतु दो–दो मास की होती है। ये क्रमश : आती–जाती है इनके नाम इस प्रकार हैं –

Ekxkfnjkfn};HkkuHkkxkR"kMVro% L;% f'kf'kjks olUr%A
xzh"eÜp o"kkZ p 'kjPp r})eUrukek dfFkrÜp "k"B% AA [15]

- वसन्त ऋतु – फाल्गुन, चैत्र (फरवरी–मार्च) में।
- ग्रीष्म ऋतु – वैशाख, ज्येष्ठ (अप्रैल–मई) में।
- वर्षा ऋतु – आषाढ़, श्रावण (जून–जुलाई) में।
- शरद ऋतु – भाद्रपद, आश्विन (अगस्त– सितम्बर) में।
- शिशिर ऋतु – कार्तिक, मार्गशीर्ष (अक्टूबर–नवम्बर) में तथा
- हेमन्त ऋतु – पौष, माघ (दिसम्बर–जनवरी) में।

पर्यावरण में पेड़–पौधे, वनस्पति की सबसे अहम भूमिका हैं। प्राचीन आयुर्वेदिक शास्त्र में ऐसी असंख्य वनस्पतियों (जड़ी बूटियों और फल–फूलों) का उल्लेख मिलता है जो अमृत जैसी प्राणदायक और विष जैसी संहारक हैं। प्रयोग–भेद से अमृतोपम वनस्पति घातक और मारक वनस्पति पोषक हो जाती है। इस बात का उदाहरण संजीवनी बूटी से दिया जा सकता है, जिसने मृत्युतुल्य पड़े लक्ष्मणजी को क्षणभर में ही जीवन प्रदान कर दिया था। हमारे देश में नाना प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। यद्यपि जनसंख्या के विकास तथा जंगलों के विनाश के कारण अनेक उपयोगी वनस्पतियाँ भी अब धीरे–धीरे विलुप्त होती जा रही हैं, फिर भी अनेक वनस्पतियाँ तथा वृक्ष हैं जो पर्यावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

v'oRFk rFkk rqylh dk egÙo & हमारे शास्त्रों में अश्वत्थ (पीपल) की महिमा बतायी गयी हैं। 'अथर्ववेद' में

^v'oRFkks nolonu%^ [16]

पीपल को देवताओं का घर ही कहा गया है। अतएव उसकी पूजा से भी देवताओं की पूजा होती है।

^v'oRFk% loZo{kk.kke^ [17]

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने पीपल को अपनी विभूति माना है। लौकिक दृष्टि के अनुसार भी यह पुत्र प्रदाता माना गया है, इसमें आयुर्वेद के अनुसार स्त्री बन्ध्यत्वदोष को हटाने की अद्भुत क्षमता है।

तुलसी के महत्त्व को बतानेवाले ये श्लोक प्रसिद्ध है–

rqylhdkuua pSo xgs ;L;kofr"BrsA
rnxgs rhFkHkwra fg uk;kfUr ;efd³djk%AA
rqylh fofiuL;kfi leUrkr~ ikous LFkyeA
Øks'kek=a HkoR;so xk³x;su pkEHklkAA [18]

इस (श्लोक) में तुलसी के आसपास का स्थान पवित्र माना गया है। इसमें मलेरिया की विषाक्त वायु को दूर करने की अद्भुत क्षमता है मृत्यु समय भी तुलसी मिश्रित गंगाजल पिलाया जाता है जिससे आत्मा पवित्र होती है और सुख–शांति से लोकान्तर की प्राप्ति हो परन्तु इसके पीछे वैज्ञानिक कारण यह है कि मृत शरीर में विषाक्त जीवाणु उत्पन्न होने से रोकना जिससे आसपास का वातावरण दूषित न हो। विषाक्त वायु तुलसी से स्वच्छ हो जाती है। मलेरिया की उत्पत्ति में सहायक मच्छर इससे दूर भागते हैं। यह सब प्रकार के ज्वरों को हटाकर स्वास्थ्य लाभ कराती है। जिन रोगियों को स्वास्थ्य लाभ हेतु गङ्गातट के पास ले जाने की सुविधा न हो, उन्हें तुलसी सेनीटोरियम में रखा जाता हैं; वही लाभ उन्हें वहाँ मिलता जाता है। हमारे पूर्वज जड़ोपासक नहीं थे, जड़ वस्तुओं के अधिष्ठातृ–देवता मानकर उनकी पूजा किया करते थे। स्वास्थ्य के होने से ही धर्माचरण में प्रवृत्ति हो सकती है। अतः स्वास्थ्यवर्धक वस्तु का धर्म सम्बन्ध अनुचित भी नहीं है। इससे पर्यावरण की भी रक्षा होती है जो कि लोककल्याणकारी है। प्रकृति स्थित जड़ पदार्थ एवं जीव सभी दृष्टि से उत्तमफलप्रद हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ज्योतिष इत्यादि प्रयोग के लिए जिस वनस्पति की आवश्यकता होती है एक दिन पहले उसे निमंत्रण देकर आते हैं कि ''कल मैं तुम्हें लेने आऊँगा''। तब अगले दिन पूजन–क्रिया करके, सम्मानपूर्वक उसे लाया जाता है। घर लाने के बाद विधि–विधान के साथ स्थापित कर और उसे देवरूप जानकर, उससे संबंधित मंत्र का जप करके प्रयोग में लाने से उसके गुण कई गुणा बढ़ जाते हैं। ज्योतिष में ग्रह

बाधा निवारण के पाँच प्रकार के उपाय बताए गए हैं वे इस प्रकार है – मंत्र, यंत्र, दान, औषधि एवं स्नान। अर्थात् ग्रह सम्बन्धित मंत्र का जप, अथवा ग्रह का यंत्र बनाकर/बनवाकर धारण करना, ग्रह के विभिन्न प्रकार के दान करने, औषधि/रत्न द्वारा तथा इन औषधियों से स्नान करने से भी ग्रह बाधा निवारण होती है।

I nHk xUFk I ph

1. पाणिनीय शिक्षा 41–42
2. सिद्धान्तशिरोमणि, मध्यमा 11
3. लघुजातक
4. विष्णुधर्मोत्तरपुराण में पितामह सिद्धांत
5. पीयुषधारा
6. वृहस्पतिसंहिता 1/6
7. ज्योतिषशास्त्र एक विश्लेषण, ज्योतिषतत्वाङग (कल्याण) गीताप्रेस, गोरखपुर पृ.सं. 35
8. शीघ्रबोध, ज्योतिर्वित्काशीनाथभट्टाचार्यविरचितः पृ.सं. 103
9. पर्यावरणशिक्षा, डॉ. योगेशसिंह, डी. आर. भटनागर, चन्द्रकान्ता शर्मा, प्रथम अध्याय पृ.सं.1–2
10. 10.पर्यावरणशिक्षा, डॉ. योगेशसिंह, डी. आर. भटनागर, चन्द्रकान्ता शर्मा, प्रथम अध्याय पृ.सं.1–3
11. गर्गसंहिता
12. भूकम्प एवं वैदिक ज्योतिष – एक समीक्षा, ज्योतिषतत्वांग (कल्याण) गीताप्रेस गोरखपुर, पृ.स. 205
13. ''बालबोधज्योतिषसारसमुच्चयः'' अरुण यज्ञदत्त शास्त्री, मुम्बई सन् 2004, पृ.सं. 5
14. ''बालबोधज्योतिषसारसमुच्चयः'' अरुण यज्ञदत्त शास्त्री, मुम्बई सन् 2004, पृ.सं. 5
15. ''बालबोधज्योतिषसारसमुच्चयः'' अरुण यज्ञदत्त शास्त्री, मुम्बई सन् 2004, पृ.सं. 5
16. शौ.सं. 5 | 4 | 9
17. भगवद्गीता 10/26
18. हिन्दू संस्कृति–कल्याण

♦❐♦